बाइबल टीचर

वर्ष 17 अप्रैल 2020 अंक 5

सम्पादकीय

क्या आपका फैसला सही था?

जीवन में कई बार कई लोग कई फैसले लेते हैं जिनका परिणाम या तो सही होता है या फिर कई बार परिणाम गलत निकलता है। शायद वो नौकरी का फैसला हो या दोस्ती का या फिर शादी का। परन्तु अपने फैसलों का परिणाम कई बार हमें सारी उम्र भुगतना पड़ता है।

आपने भी कभी शायद अपने जीवन में कोई फैसला लिया होगा, पता नहीं वो फैसला सही था या गलत परन्तु इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमें कई बार अच्छा या बुरा परिणाम तो भुगतना पड़ता है। कई बार हमारी बात एक स्थान पर आकर रूक जाती है और हम अपने एक फैसले में फंस जाते हैं। एक सही फैसला लेना आसान है यदि हम सही रूप में अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करें। इसके लिये सबसे पहिले आपको यह देखना चाहिए कि सही क्या है? क्या इससे मेरा कोई नुकसान तो नहीं है? फिर हमारे अंदर यह इच्छा होनी चाहिए कि क्या ऐसा करना मेरे लिये अच्छा रहेगा? यह इच्छा इतनी सही होनी चाहिए कि मैं पक्के तरीके से यह मान लूं कि हां यह मेरे लिये अच्छा रहेगा।

क्योंकि फैसले जो कई बार जल्दी में लिये जाते हैं उनका अक्सर परिणाम गलत होता है। आपके फैसलों का प्रभाव आपके परिजनों पर भी पड़ता है, इसलिये बड़े ही सोच-समझकर हमें फैसले लेने चाहिए। कई बार हालात ऐसे बन जाते हैं कि हम फैसला लेने के लिये मजबूर हो जाते हैं।

जब हम परमेश्वर के वचन की ओर जाते हैं तो हमें बहुत सी ऐसी बातें देखने को मिलती है कि लोगों ने कई ऐसे फैसले अपने जीवन में लिये थे कि कइयों को उससे लाभ हुआ और कई लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

बाइबल में हम राजा 12 अध्याय में एक व्यक्ति के विषय में पढ़ते हैं जिसका नाम था रहूबियाम, वह भीड़ के साथ मिलकर ऐसा फैसला करना चाहता था जो गलत था। लोगों ने उससे कहा, ‘‘तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जुआ डाल रखा था, तो तू अब अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जुएं को, जो उसने हम पर डाल रखा है, कुछ हल्का कर, तब हम तेरे आधीन रहेंगे। उसने कहा अभी तो जाओ

और तीन दिन के बाद मेरे पास फिर आना। तब वे चले गए।'' (1 राजा 12:4,5)। अब हम देखते हैं कि रहुबियाम ने किसकी सलाह ली? उसने अपने दोस्तों की सलाह ली और बूढ़ों की सम्मति को नहीं माना। उसने अपने दोस्तों की सलाह लेकर कहा, और दोस्तों ने कहा कि लोगों से कह दें "कि मेरे पिता ने हमारा जुआ भारी किया था और उनसे यह भी कहना कि मेरी छिगुलियों मेरे पिता की कमर से भी मोटी है। मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जुआ रखा था, उसे मैं और भारी करूंगा मेरा पिता तो तुम्हें कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूंगा।" (11 पद)। जब इस्राएली लोगों ने सुना की राजा हमारी नहीं सुनता। तब उन्होंने अपने-अपने डेरे पर जाने का फैसला लिया और कहा कि ''अब हे दाऊद अब अपने ही घराने की चिंता कर।'' (पद 16)। रूहबियाम की तरह आज बहुत से बड़े बूढ़ों का कहना न मानकर अपने फैसले स्वयं ले लेते है और कई बार उसका गलत परिणाम भुगतना पड़ता है।

हम प्रेरितों 12:1-3 में हेरोदेश राजा के विषय में पढ़ते हैं कि उसने कलीसिया के कई व्यक्तियों को दुख दिया तथा उन्हें तलवार से मरवा डाला और यहुदियों को खुश करने के लिये उसने पतरस को भी पकड़ लिया। उसका यह फैसला बिल्कुल गलत था। दूसरों को प्रसन्न करने के लिये उसने यह फैसला लिया था। इस्रायलियों ने भी एक गलत फैसला यह लिया कि न्यायी के स्थान पर उन्होंने राजा नियुक्त करने के लिये शमुएल से बिनती की थी। बाद में वह फैसला उनके लिये गलत साबित हुआ। (1 समुएल 8:1-5)।

आज कई लोग केवल मनुष्यों को ही प्रसन्न करते रहते हैं तथा सच्चाई को नहीं मानना चाहते। जैसे कि पौलुस कहता है कि "यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।'' (गलतियों 1:10)। बाइबल में हम ऐसे धनी लोगों के विषय में पढ़ते हैं जिन्होंने परमेश्वर को प्रथम स्थान न देकर अपने धन को अधिक महत्व दिया। (मत्ती 19, लूका 18, और मरकुस 10)। हमें यह सीखना चाहिए कि अपने जीवनों में जब आत्मिक बातें चुनने का अवसर हमे मिलता है तो हम किसे अधिक महत्व देते हैं? मत्ती 6:19-21 से हम सीखते हैं कि सही स्थान धन जमा करने के लिये कौन सा है? यीशु ने कहा था कि स्वर्ग में धन इकट्ठा करो। पौलुस कहता है कि संसार के चंचल धन पर आशा न रखें। (1 तीमु. 6:17)। दुनिया का धन, दौलत कुछ ही समय के लिये है। (1 तीमु. 6:19)।

लूत जो कि इब्राहिम का भतीजा था जब उसे फैसला करने के लिये बोला गया तो उसने सही स्थान नहीं चुना। हम उत्पत्ति 12 और 13 अध्यायों में पढ़ते हैं कि उसने गलत फैसला लिया था। उन्होंने सदोम नाम के स्थान को चुना था जो कि एक सही स्थान नहीं था। (उत्पत्ति 18:32) लूका 15 अध्याय में उड़ाऊ पुत्र के बारे में हम पढ़ते हैं जो अपने पिता का घर छोड़कर चला गया था।

परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र बनाया है तथा हम अपने फैंसले खुद ले सकते हैं इसलिये जीवन में प्रत्येक फैसला सोच समझकर लें।

परमेश्वर का अद्‌भुत प्रेम

सनी डेविड

एक बड़ा ही प्रचलित वाक्य जो अकसर सुनने में आता है वह इस प्रकार है, "परमेश्वर प्रेम है।" परन्तु हम किस तरह से जान सकते हैं कि परमेश्वर प्रेम है? केवल यह कह देने से कि परमेश्वर प्रेम है, वास्तव में यह बात प्रमाणित नहीं हो जाती कि परमेश्वर प्रेम है। अनेकों लोग जो इस वाक्य को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं, इसका अर्थ वास्तव में नहीं जानते, कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है? कदाचित कोई कहे, कि हम जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है, क्योंकि यदि वह हम से प्रेम नहीं करता तो इस संसार में भांति-भांति के जीवन उपयोगी साधन हमें कौन देता? उसने हमें सुन्दर देह दी है, और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेकों साधान जुटाए हैं। उसने हमें बोने के लिये बीज दिया है; वह हमारे खेतों पर अपनी वर्षा भेजता है; उसने हमारे खाने के लिये तरह-तरह के भोजन पदार्थ पैदा किए हैं; हम उसका पानी पीते हें; वह अपना सूर्य हम पर चमकाता है; हम उसकी हवा में सांस लेकर जीते हैं परन्तु क्या इन सब वस्तुओं से वास्तव में परमेश्वर का प्रेम हम पर प्रगट होता है? क्या जगत में मनुष्य के लिये खाने-पीने और ऐश-ओ-आराम से रहने के सिवाए और कुछ नहीं है? क्या मनुष्य के लिये संसार में अच्छे से अच्छा खाना और सुख-चैन से रहना ही सब कुछ है?

हम सब जानते हैं कि एक दिन अवश्य ही मनुष्य को इस धरती को और इस जगत की सारी भौतिक वस्तुओं को सदा के लिये छोड़कर जाना पड़ता है। उसके साथ कोई भी वस्तु नहीं जाती, वह अकेला जाता है-केवल उसकी आत्मा। वह इस संसार के भौतिक वातावरण से दूर होकर, आत्मिक वातावरण में चला जाता है, जहां उसकी आवश्यकताएं भौतिक नहीं परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण ही होती हैं। परन्तु वहां, यदि वह उद्धार के वस्त्रों से सुसज्जित न पाया जाए, यदि उसकी आत्मा उद्धार के आत्मिक भोजन से तन्दरुस्त न हो, तो उस आत्मिक संसार में उसका कष्ट कितना बड़ा होगा। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है? प्रभु यीशु ने ऐसे मनुष्य की स्थिति को दर्शाने के अभिप्राय से कहा, कि परमेश्वर ऐसे मनुष्य के विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देकर कहेगा कि "उसे बाहर अंधियारे में डाल दो, वहां रोना और दांत पीसना होगा।" (मत्ती 22:13)। और यह दण्ड अनन्त दण्ड होगा, जिसका कभी अन्त न होगा। (मत्ती 25:46)।

सो यदि परमेश्वर प्रेम है, तो क्या उसने मेरे उद्धार के लिये कुछ किया है? क्या वह मेरे से वास्तव में प्रेम करता है, और मुझे अनन्त मृत्यु-दण्ड से बचाकर अनन्त जीवन में प्रवेश दिलाने के लिये तैयार है? बहुतेरे लोगों का विचार है, कि

परमेश्वर प्रेम है, परन्तु उद्धार प्राप्त करने के लिये मनुष्य को स्वयं ही अपने पापों का दण्ड भोगना आवश्यक है। उनके विचार में, प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने पापों का दण्ड स्वयं भुगतने के बाद ही उद्धार प्राप्त कर सकता है। परन्तु प्रश्न यह है, कि परमेश्वर जो कि प्रेम है, क्या मुझे मेरे पापों का दण्ड दिये बिना नहीं बचा सकता? यह बिल्कुल उचित है, न्यायानुसार कि पाप का दण्ड अवश्य ही मिलना चाहिए। परन्तु यदि परमेश्वर मनुष्य को पाप के दण्ड से नहीं बचा सकता, तो यह कहने के विपरीत कि परमेश्वर प्रेम है, यूं कहना अधिक उचित होगा, कि परमेश्वर न्याय है।

अनेकों लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये अकेले जंगलों वा पहाड़ों में निकल जाते हैं, वहां से भूखे-प्यासे रहकर अपने आप को तरह-तरह से कष्ट देते हैं। उनके विचार अनुसार, इस प्रकार से वे अपने पिछले पापों का कर्जा चुकाकर उद्धार में प्रवेश पा लेते है। परन्तु इस में मैं परमेश्वर का प्रेम नहीं देखता। क्योंकि यदि मनुष्य को स्वयं ही दुख उठाकर अपने पापों का कर्जा भरना है, तो फिर परमेश्वर प्रेम कैसे ठहरा? वह तो वास्तव में केवल एक न्यायी ठहरा।

परन्तु मान लीजिये, यदि कोई पिता अपने बालक को यह आदेश देकर जाता है, कि रात मैं बड़ी देर से घर लौटूंगा और तुम घर के भीतर द्वार बंद करके रहना और बाहर बिल्कुल मत निकलना, क्योंकि बाहर खतरा है। किन्तु वह बालक पिता की आज्ञा को हल्की सी बात जानकर अंधेरे में बाहर निकल जाता है, और कुछ ही देर में वह एक भारी कठिनाई में फंस जाता है। अब जब उसका पिता आधी रात के बाद घर लौटता है तो अपने बालक को घर में न पाकर वह यह नहीं कहता, कि मैंने उसे घर से बाहर निकलने को मना किया था, परन्तु उसने मेरी आज्ञा नहीं मानी, सो अब यदि वह किसी कठिनाई में फंस गया है तो अपनी ही गलती से फंसा है, उसे दुख उठाने दो, उसे अपने किए का दण्ड अवश्य ही मिलना चाहिए। परन्तु इसके विपरीत, वह बड़ा चिंतित हो जाएगा। वह जानता है कि उसके बालक ने उसकी आज्ञा तोड़ी है, परन्तु यह कहने के विपरीत, कि उसे अपने किए का फल स्वयं भोगने दो, वह एकदम उसे ढूंढ़ने और बचाने के लिये निकल पड़ेगा। उसे बचाने के लिये वह स्वयं कष्ट उठाएगा, वह मीलों उसे ढूंढ़ने के लिये इधर-उधर जाएगा, वह अपने बालक को ढूंढ़ने वा बचाने के लिये सब कुछ करने और देने के लिये तैयार हो जाएगा, यहां तक कि अपने प्राणों को भी जोखिम में डालने से न रूकेगा।

जबकि हम शारीरिक होकर अपने बालकों के साथ ऐसा व्यवहार करना जानते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता, जो प्रेम है, इससे बढ़कर हमारे साथ क्यों न करेगा? सो यह जानते हुए कि परमेश्वर प्रेम है, क्यों हम ऐसा सोच लेते हैं कि हमें अपने पापों में नाश होना आवश्यक है? क्यों हम ऐसा सोचते हैं कि हमें स्वयं अपने पापों का फल भुगतना आवश्यक है? जबकि हमारा परमेश्वर कहता है, "परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन

करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा, वरन जीवित रहेगा। उसने जितने अपराध किए हों, उनमें से किसी का स्मरण उसके विरूद्ध न किया जाएगा; जो धर्म का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?" (यहेजकेल 18:21-23)।

अपनी एक पत्री में यूहन्ना नाम का प्रभु का एक प्रेरित लिखकर कहता है, "हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है, और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" वह न केवल यही बताता है कि परमेश्वर प्रेम है, परन्तु यह भी कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है। सो वह आगे कहता है, "जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (1 यूहन्ना 4:7-10)। सो यहां हम देखते हैं कि किस प्रकार से परमेश्वर प्रेम है।

आप शायद बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ लें, लम्बी-लम्बी यात्राएं कर लें, ऊंचे-ऊंचे तर्क कर लें, परन्तु इस प्रश्न का उचित उत्तर आपको कहीं पर भी न मिल सकेगा, कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है। परमेश्वर का प्रेम वास्तव में हमें केवल एक ही जगह मिलता है, और वह है क्रूस के ऊपर यीशु का बलिदान। वहां हम परमेश्वर के प्रेम को मनुष्य के प्रति उमड़ते हुए देखते हैं। वहां हम वास्तव में देखते हैं कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने इकलौते पुत्र को प्रत्येक मनुष्य के पापों के प्रायश्चित के लिये दे दिया। वहां हम देखते हैं कि "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8)। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जगत का उद्धार करने के लिये भेजा। उसने उसके द्वारा लोगों के सामने बड़े-बड़े अद्‌भुत काम दिखाए, ताकि लोग विश्वास ले आएं कि वह वास्तव में परमेश्वर की ओर से आया है। फिर, परमेश्वर की इच्छा और मनसा के अनुसार, झूठे आरोपों के आधार पर यीशु पकड़वाया गया और उसे क्रूस के ऊपर लटकाकर कड़ी मौत की सजा दी गई। पवित्र बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने संसार के सारे लोगों के पापों को लेकर अपने पुत्र के ऊपर लाद दिया, और उन्हीं पापों के कारण यीशु की क्रूस की भयानक मृत्यु से मरना पड़ा। लिखा है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (1 पतरस 2:24)। मनुष्य पापी था और इसलिये दण्ड भी उसे ही मिलना चाहिए था, परन्तु क्योंकि परमेश्वर

प्रेम है इसलिये उसने मनुष्य के अपराध और दण्ड दोनों ही अपने ऊपर ले लिये। परमेश्वर ने कहा, मैं मनुष्य को पाप में नाश होने नहीं दूंगा; मनुष्य पाप के रहते मेरे पास नहीं पहुंच सकता, सो मैं स्वयं होने नहीं दूंगा; मनुष्य पाप के रहते मेरे पास नहीं पहुंच सकता, सो मैं स्वयं उसके पास नीचे पृथ्वी पर जाऊंगा; मैं उसके अपराधों को अपने ऊपर लेकर उसके पापों के कारण स्वयं दण्ड सहूंगा। और परमेश्वर के प्रेम की इसी योजना को हम यीशु के क्रूस पर देखते हैं। वहां परमेश्वर संसार पर अपने प्रेम को प्रगट करके हम से कहता है, कि देखो, मैंने तुम्हारे लिये कितने दुख सहे, मैंने तुम्हें बचाने के लिये अपने आप को दे दिया; मैंने तुम्हारा कर्जा भर दिया; मैंने तुम्हारा प्रायश्चित चुका दिया। इसीलिये, प्रभु यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती 11:28)।

क्या आप अपने पापों के बोझ से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं? आपके उद्धार का केवल एक ही मार्ग है, और वह है यीशु मसीह, जो आपके पापों का प्रायश्चित है। परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु में विश्वास करें, और पाप से अपना मन फिराएं और यीशु के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें; और इस प्रकार से अपने पुराने मनुष्यत्व को उतारकर यीशु को पहिन लें और एक नए जीवन की चाल चलें। (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3-6; गलतियों 3:26, 27)। क्या आप परमेश्वर के प्रेम की पुकार का जवाब प्रेम के साथ न देंगे? प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। (यूहन्ना 14:15)।

मित्रो, प्रभु आपसे प्रेम करता है, और आपके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिये उसने स्वयं अपने आप को दे दिया, और वह चाहता है कि आप भी उससे प्रेम रखें और उसकी आज्ञाओं को मानकर अपने प्रेम को उसके प्रति व्यक्त करें। अब जबकि आप इन बातों पर विचार करते हैं, परमेश्वर आपको आशीष दे।

यीशु के नाम में उद्धार

जे. सी. चोट

हमारे पाठ का शीर्षक है यीशु के नाम में उद्धार। हम जानते हैं कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है, और हम सब पापी हैं, और पापी होने के कारण हमें अपने पापों से मुक्ति की आवश्यकता है। परन्तु यह देखने की आवश्यकता है कि मुक्ति यीशु के नाम के साथ कैसे और क्यों जुड़ी हुई है?

आज इस विषय में बहुत कुछ कहा जाता है कि नाम का होना आवश्यक है कि नहीं? बहुत से लोग कहते हैं कि नाम होना कोई आवश्यक नहीं है। कोई भी नाम

हो सब चलेगा। आज धार्मिक संसार में बहुत से नामों और नाम के साथ लगने वाली पदवियों पर ज़ोर दिया जाता है। लोग कहते हैं कि किसी भी नाम से जाने जाओ, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। अन्त में सब कुछ स्वीकार्य होगा। परन्तु जब हम संसार में देखते हैं तो नामों पर काफ़ी जोर दिया जाता है। कई बार लोग कहते हैं कि नाम बिकता है तथा कई लोग अपनी वस्तुओं को बेचने के लिये नामों का विज्ञापन देते है। बहुत सारा पैसा इसके लिये खर्च किया जाता है। कई बार अच्छे माल को बेचने के लिये लोग काफी विज्ञापन देते हैं। जब हम चैक लिखते हैं तो उस पर हस्ताक्षर करते है, क्योंकि उसके बिना चैक व्यर्थ है। जब हम कोई घर खरीदते हैं तो कागजात पर नाम होना आवश्यक होता है। इस सबसे यही मालूम होता है कि नाम होना कितना आवश्यक है।

पत्नी अपने पति का नाम अपने ऊपर रखती हैं। हमारे बच्चे भी पिता का नाम अपने ऊपर रखते हैं। यानि हमारी पत्नी तथा बच्चे हमारे से संबंध रखते हैं इसलिये पति तथा पिता का नाम अपने नाम के साथ लगाते हैं।

जब हम अपना नाम भी रखते हैं या हमारे माता-पिता भी हमारा नाम अच्छा से अच्छा रखना चाहते हैं कई बार हम अपने अच्छे नाम से जाने जाते हैं। कई लोग हमें अच्छा नेक ईमानदार समझते हैं और यह अच्छी बात है कि लोग हमारे अच्छे नाम तथा चरित्र से हमें जानते हैं। वे जानते हैं तथा उन्हें विश्वास है कि हम उनके साथ धोखा नहीं करेंगे। एक अच्छा नाम हमें अचानक ही नहीं मिल जाता इसके लिये हमें परिश्रम करना पड़ता है। अपने अच्छे नाम को हमें संभाल कर रखना चाहिए ताकि किसी भी बात पर कोई हमारे ऊपर उंगली न उठा सके। अपने अच्छे नाम को हमें संभालकर रखना चाहिए। अच्छा नाम होने से बहुत से लाभ होते हैं। यदि हम झूठे हैं, बेईमान हैं तब हमारा नाम बुरे रूप में जाना जाता है।

इसलिये नाम होना बड़ा आवश्यक है। सुलेमान प्रचारक ने एक बार कहा था, ''बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चांदी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है।'' (नीति 22:1)। यह बात कितनी सच्ची है। जबकि नाम सब स्थानों पर आवश्यक है तब हम कई बार धार्मिक बातों में इसकी आवश्यकता को क्यों नहीं देखते? परन्तु इसमें यह बात इतनी आवश्यक नहीं है कि मनुष्य इसके विषय में क्या सोचता है बल्कि यह देखना आवश्यक है कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है? यदि हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तब हम उस बात को मानेंगे जो वह हमसे करने के लिये कहता है। अब देखिये उसका वचन बाइबल क्या कहती है। ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' (प्रेरितों 4:12)। यहां हम देखते हैं कि पतरस यह बताने की कोशिश कर रहा है कि यीशु के नाम में ही उद्धार है।

किसी मनुष्य के नाम में नहीं बल्कि यीशु के नाम में उद्धार है।

जबकि उद्धार यीशु के नाम में है तब हम समझ सकते हैं कि यीशु ने एक सुसमाचार दिया था और मनुष्य को उद्धार पाने के लिये उस सुसमाचार को मानना है। केवल एक ही सुसमाचार है और वे यह कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया तथा तीसरे दिन जी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। इसलिये यदि आज कोई उद्धार पाना चाहता है तो उसे यीशु में विश्वास करके बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है (प्रेरितों 2:38, मरकुस 16:16; तथा रोमियों 6:3-4)।

क्योंकि यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाया और अपने जीवन का बलिदान क्रूस पर देकर उसने कलीसिया की स्थापना की। यह कलीसिया उसकी देह के समान है और वह इसका उद्धारकर्ता है। (मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28; इफि. 5:23)। कलीसिया यीशु का नाम अपने ऊपर रखती है। रोमियों 16:16 में प्रेरित पौलुस कहता है मसीह की सारी कलीसियाएं आपको नमस्कार कहती है।'' प्रेरित पौलुस मसीहीयों से कहता है कि तुम मसीह की देह हो (1 कुरि. 12:27)। यह देह क्या है? बाइबल कहती है कि यह मसीह की देह है।'' (इफिसियों 4:4)। पौलुस कहता है कि यीशु इस देह यानि कलीसिया का सिर है।'' (कुलु. 1:18)।

फिर आगे हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने यीशु के पांव तले सब कुछ करके उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहरा दिया। (इफि. 1:22, 23)। लिखा है जैसे पति अपनी पत्नी का सिर है वैसे यीशु मसीह कलीसिया का सिर है। (इफि. 5:23)। यह कलीसिया यीशु का नाम अपने ऊपर रखती है और उसीके नाम से जानी जाती है। अब यीशु ने कितनी कलीसियाएं बनाई थी? हम पढ़ते हैं कि उसने केवल एक अपनी कलीसिया को बनाने का वायदा किया था? उसने केवल एक बनाई। (मत्ती 16:18)। वह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। (इफि. 5:23)।

पूरे संसार में जहां, भी मसीह की कलीसियाएं विद्यमान हैं वे सब मिलकर एक कलीसिया जानी जाती है।

इस कलीसिया के सदस्य मसीही नाम से जाने जाते हैं। (प्रेरितों 11:26) हम पढ़ते हैं कि चेले सबसे पहिले अन्ताकिया में मसीही कहलाये। प्रेरितों 26:28 में पौलुस ने मसीही नाम का वर्णन किया है। और 1 पतरस 4:16 में पतरस ने कहा था कि यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाये तो लज्जित न हो। जब हम मसीही नाम अपने ऊपर रखते हैं तो, इससे उस नाम को आदर मिलता है। जब हम यीशु का नाम नहीं रखते तो कैसे उसका आदर करेंगे। इसके बारे में जरा सोचिये।

प्रेरित पौलुस ने कहा कुलु. 3:17 में कहा था कि जो कुछ भी करो वो प्रभु के नाम में या यीशु के नाम में करो। यदि हम यीशु से संबंध रखते हैं तो सब कुछ उसके नाम के द्वारा करेगें और उसे महिमा और आदर देंगे।

यीशु परमेश्वर है

जैरी बेट्स

अधिकतर लोग यह मानेंगे कि परमेश्वर पिता खुदा है। कोई भी व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से परमेश्वर को मानता है वह यह मानेगा कि परमेश्वर पिता खुदा है, सो हम इसे सच मान लेंगे यह सही होगा। इस पाठ में हम जिस प्रश्न की बात कर रहे हैं वह यह है कि क्या यीशु खुदा है?

उसका पूर्व-अस्तित्व

एक आयत जो पृथ्वी पर यीशु के जीवन से पहले उसके पूर्व-अस्तित्व को साबित करती है, वह यूहन्ना 1:1 है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" हमें वचन और परमेश्वर के बीच अंतर का पता चलता है क्योंकि वचन परमेश्वर के साथ था। यह कहना मूर्खता होगी कि परमेश्वर अपने खुद के साथ था। फिर भी हम देखते हैं कि वचन परमेश्वर था। यानि उसका स्वभाव परमेश्वर था। 1:14 में हम इसी अंतर को देखते हैं, जहां हम पढ़ते हैं कि वचन देहधारी हुआ जो कि साफतौर पर यीशु के लिए कहा गया है। आयत 15 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यह घोषणा करता है कि यीशु उससे बड़ा था क्योंकि वह उससे पहले था। यीशु यूहन्ना से पहले था पर फिर भी शारीरिक रूप में उसका जन्म यूहन्ना से लगभग छह महीने बाद हुआ।

यूहन्ना 8:58 में यीशु ने कहा, "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं" वाक्यांश का इस्तेमाल निर्गमन 3:14-15 में यहोवा परमेश्वर के अपने आप में वजूद में होने का संकेत देने के लिए किया गया था। यीशु केवल इतना ही नहीं कह रहा था कि वह अब्राहम से पहले जीवित था या वह अब्राहम का अवतार था, बल्कि इसके बजाय उसने अपने लिए परमेश्वर पिता वाला रुतबा ही इस्तेमाल किया। जो उसे परमेश्वर के बराबर और परमेश्वर की तरह अपने आप में वजूद रखने वाला बना देता है।

यीशु स्वर्ग से आया था। यूहन्ना 3:13 में यीशु निकुदेमुस से बात करते हुए कहता है, "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।" "मनुष्य का पुत्र" स्पष्टतया यीशु ने अपने लिए कहा है, इस प्रकार यीशु यह घोषणा करता है कि पृथ्वी पर आने से पहले वह स्वर्ग में जीवित था। यूहन्ना 6:51 में यीशु ऐसी ही एक और घोषणा करता है, "जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं।" इसके अलावा यूहन्ना 6:62 में यीशु घोषणा करता है, "यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?" अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग में वापस लौट गया जहां पर वह पृथ्वी पर आने से पहले था।

हर यहूदी भजन 110 को मसीहा का भजन मानता था। इसकी आयत 1 में हम पढ़ते हैं, "मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब

तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं। इसमें प्रभु मसीहा को कहा गया है जबकि यहोवा परमेश्वर पिता है। इस प्रकार परमेश्वर की प्रेरणा से दाऊद अपनी अजन्मी संतान को प्रभु कहता है। मसीहा दाऊद का प्रभु और उसकी संतान दोनों कैसे हो सकता था? यीशु ने इस भजन को अपने ऊपर लागू किया। "तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा? (मत्ती 22:43-45) इस प्रकार यदि यीशु मसीहा था तो उसके लिए पहले से अस्तित्व में होना आवश्यक था, या अन्य शब्दों में यूं कहें उसके लिए खुदा होना आवश्यक था। यहूदियों को इसे समझने में परेशानी थी।

परमेश्वर के नाम यीशु के लिए इस्तेमाल किए गए

यशायाह 42:8 में परमेश्वर कहता है, "मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा..." परमेश्वर की प्रेरणा से लिखते हुए मत्ती यशायाह 40:13 में तीतुस यह घोषणा करता है कि हम उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने की बाट जोहते रहें। ध्यान दें कि यीशु को यहां परमेश्वर कहा गया है।

यीशु के खुदा होने के शायद सबसे स्पष्ट घोषणा यूहन्ना 20 अध्याय में मिलती है। यीशु अपने सब चेलों पर प्रकट हुआ, जिस समय थोमा उनके साथ नहीं था और जब चेलों ने थोमा को बताया कि उन्होंने यीशु को देखा है तो उसने यह ऐलान कर दिया कि जब तक वह यीशु को अपनी आंखों से नहीं देख लेता और उसके हाथों में ठुकी कीलों के निशान में उंगली डालकर जांच नहीं लेता तब तक वह विश्वास नहीं करेगा। अगले रविवार यीशु पर फिर अपने चेलों पर प्रकट हुआ, अब की बार थोमा उनके साथ था। यीशु ने जीवित होने की व्यक्तिगत पुष्टि के बाद थोमा ने घोषणा की, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर।" यहां परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द थियोस है जो कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में इस्तेमाल हुआ है और हर जगह यह खुदा के लिए ही है। इस प्रकार हमारे पास यह पक्की पुष्टि है कि यीशु वैसे ही खुदा है जैसे परमेश्वर पिता खुदा है।

यीशु को अल्फा और ओमेगा, पहला और अंतिम कहा गया है। अल्फा वर्णमाला का पहला अक्षर है जबकि ओमेगा यूनानी वर्णमाला का अंतिम अक्षर है। यशायाह 44:6 में यहोवा यह घोषणा करता है, "मैं सबसे पहला हूं और मैं ही अंत तक रहूंगा; मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है ही नहीं।" प्रकाशितवाक्य 1:8 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर "अल्फा और ओमेगा" है। केवल कुछ आयतों के बाद (1:17), यीशु प्रेरित यूहन्ना से कहता है कि "मैं प्रथम और अंतिम हूं।" प्रकाशितवाक्य 22:12-13 में यीशु के लिए इन्हीं शीर्षकों का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रकार से यीशु और सर्वशक्तिमान परमेश्वर दोनों के लिए एक ही शीर्षक इस्तेमाल किए गए है, जो यह साबित करता है कि दोनों बराबर है।

इब्रानियों 5:9 में हम पढ़ते हैं कि यीशु अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए

उद्धार का कर्ता या कारण है। किसी और नाम में उद्धार नहीं है (प्रेरितों 4:12)। लोगों को उनके पापों से परमेश्वर के सिवाय और कोई नहीं बचा सकता। मत्ती 1:21 में मरियम से अपने होने वाले बच्चे का नाम यीशु रखने को कहा गया था क्योंकि उसने अपने लोगों को उनके पापों से बचाना था। मसीह वह काम कर रहा है जो कि परमेश्वर कर सकता है। इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु परमेश्वर के साथ बराबर है। यीशु को इस्मानुएल भी कहा गया, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ।"

कुलुस्सियों 2:9 में पौलुस घोषणा करता है कि परमेश्वर (खुदाई) की परिपूर्णता यीशु में वास करती थी परन्तु वह अपने आप से परमेश्वर नहीं है। जब पौलुस यह कहता है कि खुदाई की भरपूरी यीशु में वास करती थी, तो वह यह कह रहा है कि हर वह बात जो परमेश्वर को परमेश्वर बनाती है यीशु में भी है। अन्य शब्दों में यीशु उतना ही परमेश्वर है जितना पिता परमेश्वर है।

आपका विवाह सफल हो सकता है पैसे की समस्या को हल करने से

कोय रोपर

जब आपका विवाह होता है, आपका और आपकी पत्नी का कभी-कभार पैसे के लिए विवाद हो जाता है। बाइबल के एक कथन को अपनाते हुए हमें इस बात को नोट करना होगा कि घर में पैसा ही हर झगड़े की जड़ है। इसके निम्न कुछ उदाहरण है:

(1) कोई दम्पत्ति अधिक धन नहीं कमा पाता, जिस कारण वे दुखी हैं क्योंकि वे निर्धन हैं, पति को दो या उससे अधिक जगह पर नौकरी करनी पड़ती है ताकि वे अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें। इस कारण पति के पास पत्नी के लिए समय नहीं होता।

(2) एक दम्पत्ति अधिक खर्च कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप वे कर्ज में डूब जाते हैं और अपने बिल नहीं चुका पाते। वे एक-दूसरे पर फिजूल खरीदारी करने का आरोप लगा सकते है। पत्नी हैरानी से चीखकर कहेगी कि मैंने ऐसे पुरुष से विवाह क्यों किया, जो परिवार का खर्च नहीं चला सकता? दोनों इसी फिक्र में कई रातें बिना सोए गुजार देते हैं और फिर उन्हें अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मदद मांग कर शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है।

(3) एक दम्पत्ति देखने में खूब धनवान होगा, लेकिन सच्चाई में वे सांसारिक लालसाओं में ऐसे जकड़े हैं जिसका कोई अन्त नहीं। जितना वे कमाते हैं उनमें और कमाने की लालसा जागती है। खुशी उनके आस-पास ही है, लेकिन इतना पा लेने के बाद वे भी तृप्त नहीं होते। सांसारिक लालसाओं के कारण वे भूल गए हैं, जो विवाहित जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। जैसे-जैसे उनके पास सांसारिक वस्तुएं दोगुनी होती जाती हैं उनका आपसी प्रेम कम होता जाता है और अन्त में बिल्कुल समाप्त हो जाता है।

ये सब समस्याएं वैवाहिक रिश्ते पर असर डालती है। जितना कोई दम्पत्ति धन की समस्या के बारे में सोचेगा, उनके पास अपने सफल वैवाहिक जीवन के लिए समय और उत्साह कम होता जाएगा। धन के कारण एक-दूसरे से नाराजगी उस प्रेम को खा जाएगी जो वैवाहिक जीवन को आपस में बांधे रखता है, बिल्कुल दीमक के उन कीड़ों की तरह जो घर की चौखट को धीरे-धीरे खा जाते हैं। अन्ततः उनमें कुछ नहीं बचता, सिवाय एक खोल के लेकिन अन्दर से खोखला होता है। धन की समस्या विवाह को नष्ट कर सकती है।

धन के लिए बाइबल की शिक्षा

धन की समस्या को बाइबल के नियमों द्वारा कैसे हल किया जा सकता है? बाइबल धन और विवाह के बारे में क्या सिखाती है?

मसीही लोग जीने के लिए काम करें (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)

बाइबल मसीही लोगों को सिखाती है कि "अपने हाथों से काम करके" अपनी जीविका कमाएं (1 थिस्सलुनीकियों 4:11; देखें इफिसियों 4:28)। यदि कोई मनुष्य काम करना न चाहे तो खाना भी ना पाए (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। यदि कोई अपनों की ओर निज करके अपने घराने की चिंता न करे, तो वह विश्वास से फिर गया और अविश्वासी से भी बुरा बन गया (1 तीमुथियुस 5:8) जीविका कमाने से मना करने वाले व्यक्ति को ताड़ना दी जानी और आवश्यक हो तो कलीसिया द्वारा अनुशासित किया जाना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 3:6-15)। जो मसीही काम कर सकते हैं वे जान-बूझकर सरकार के खर्चे पर जीवन व्यतीत करना नहीं चाहेंगे और न ही किसी संस्था से मदद लेना चाहेंगे।

मसीही लोग काम करते हैं ताकि दे सकें (इफिसियों 4:28)

बाइबल बताती है कि मसीही लोगों के काम करने का एक कारण यह भी है कि वे दूसरों की मदद कर सकें (इफिसियों 4:28)। लोगों को काम करना चाहिए ताकि वे अपनों का और परिवार का पालन पोषण कर सके, लेकिन उन्हें इसलिए भी काम करना चाहिए ताकि वे जरूरतमंदों की मदद कर सकें। शुरू से ही पति-पत्नी दोनों को काम जो भी उनके पास हो, उसमें से दिल खोलकर प्रभु की सेवा के लिए देना चाहिए।

धन कमाना मसीही लोगों का मुख्य उद्देश्य नहीं है (मत्ती 6:19क)

बाइबल सांसारिक वस्तुओं के विरूद्ध चेतावनी देती है और सिखाती है कि एक दम्पत्ति के जीवन का मुख्य लक्ष्य सिर्फ धन कमाना और बचाना ही नहीं होना चाहिए। यीशु ने कहा, "अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा मत करो" (मत्ती 6:19क)। उसने चेतावनी दी थी, "लोभ से बचो"। पौलुस ने लिखा, "धन का प्रेम सब प्रकार की बुराइयों" की जड़ है (1 तीमुथियुस 6:10) और मसीही लोगों को आग्रह करता है कि धन की लालसा न करो। हमारे संसार में बहुत से लोग धन की दौड़ में शामिल हैं। मसीही लोगों को इस दौड़ में भाग लेने से इंकार करना होगा।

इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि यीशु चाहता है कि मसीही लोग गरीबी में

रहें। एक मसीही दम्पत्ति घर ले सकता है, फर्नीचर ले सकता है, कपड़े खरीद सकता है। इसके साथ ही अपने बच्चों के भविष्य के लिए धन जमा कर सकता है। यदि आप अपनी बुलाहट के प्रति वफादार रहना चाहते हैं तो सांसारिक वस्तुओं पर समझदारी से उचित खच्र करें। आप धन को परमेश्वर का स्थान देने के लिए आजकल के लोगों की तरह धन की दौड़ में शामिल होना कभी कबूल नहीं कर सकते।

पहले अधिकतर मसीही गरीब हुआ करते थे, लेकिन उनमें से सभी ऐसे नहीं होते थे। जब पौलुस ने यह कहा कि वह नहीं चाहता कि मसीही लोग अमीर बनना चाहें क्योंकि, पैसे "का प्रेम" सब बुराइयों की जड़ हैं (1 तीमुथियुस 6:9, 10)। उसने अमीर को भी नसीहत दी। 1 तीमुथियुस 6:17-19 के अनुसार (1) वे अभिमानी न हो (2) वे "चंचल धन" पर आशा न रखें (3) परमेश्वर पर भरोसा रखें (4) उन्हें पहचानना हैं कि सब कुछ परमेश्वर की ओर से मिलता है (5) भले कामों में धनी बनें और सहायता करने में तत्पर हो। इन नियमों का पालन करके वे लोगों के लिए अच्छी नींव डालें और "सत्य जीवन को वश में कर ले।

मसीही लोग अपने धन के भण्डारी हैं (1 पतरस 4:10)

बाइबल सिखाती है कि मसीही लोग पृथ्वी पर अपनी सम्पत्ति के भण्डारी हैं (1 पतरस 4:10) हर वस्तु जो अस्तित्व में है, सचमुच परमेश्वर की ही है। आपके पास जो कुछ भी हैं, सब परमेश्वर का है, आपको तो कुछ समय के लिए ब्याज पर दिया गया है ताकि आप इन चीजों का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा के लिए कर सकें। आप जिन चीजों को अपना कहते हैं, परमेश्वर द्वारा आपको उन चीजों का भण्डारी ठहराया गया है और उनका इस्तेमाल आप कैसे कर सकते हैं, इसका आपको उसे हिसाब देना होगा। इस कारण आप जो धन रविवार को परमेश्वर को "परमेश्वर के धन" के रूप में देते हैं सिर्फ वहीं आपके पास जितना भी धन है सब परमेश्वर का है। जब भी आप धन खर्च करने का कोई फैसला लेते हैं पहले यह सोच लें कि परमेश्वर आपसे उन आशिषों का इस्तेमाल कैसे करवाना चाहता है।

धन के इस्तेमाल के विषय में कुछ व्यावहारिक सुझाव

बाइबल के इन नियमों से कौन से व्यावहारिक सुझाव दिये जा सकते हैं, जो नवविवाहितों के लिए मददगार साबित हो? आप और आपकी पत्नी धन के कारण होने वाले विवादों को कैसे टाल सकते हैं?

धन आपके काम पर हावी न हो

आप कितना धन कमा सकते हैं, यही आपका उद्देश्य नहीं होना चाहिए, शायद आपका मुख्य उद्देश्य भी नहीं जब आप कोई नहीं नौकरी करें। यह अवश्य है कि आप उतना कमा पाएं ताकि आपके परिवार का निर्वाह हो सके (या वे बिना चिंता के आरामदायक जीवन जी सकें) फिर भी अपना काम सिर्फ इसलिए चुनना कि उससे आपको कितना मिलेगा, आपका सांसारिक व्यवहार दर्शाता है। आपको अपने आप से पूछना चाहिए, "मैं अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल परमेश्वर की सेवा के लिए कैसे कर सकता हूं?" और "मेरे परिवार की आत्मिक भलाई के लिए क्या उचित है?"

फिजूलखर्ची न करें

आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप फिजूलखर्ची न करें। बेसिल ओवरटन जो लम्बे समय तक "द वर्ल्ड इवैंजलिस्ट" के सम्पादक रहे, कहा करते थे "यदि आपका खर्च आपकी आय से अधिक बढ़ जाएगा तो आपकी दिखावे की चाह आपके पतन का कारण बन जाएगी।" क्रेडिट कार्ड देनेवाली कम्पनियां बहुत आसानी से आपको गहरे कर्ज में डूबो देती है, जिसका परिणाम आपके परिवार को भुगतना पड़ता है। इससे कलीसिया को भी नुकसान पहुंचता है क्योंकि जब कलीसिया के सदस्य बड़े कर्ज में डूबे हो तो वे उतना चंदा नहीं दे सकते, जितना उन्हें देना चाहिए।

जवान लोगों को कई बार समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनकी अपेक्षाएं बहुत ऊंची होती हैं। उन्होंने कई साल पहले अपने माता-पिता के खर्च पर अच्छा जीवन व्यतीत किया होता हैं जब उनका विवाह होता है वे तब भी वैसा ही अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। वो सब पाने के लिए जो वे चाहते हैं, अक्सर कर्ज में डूब जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके वैवाहिक जीवन में दिक्कतें आती हैं। इसका हल यही है कि अगर आपके पास धन नहीं है तो खर्च भी न करे। अगर आप घर के लिए कोई सामान खरीदना चाहते हैं लेकिन उसका भुगतान नहीं कर सकते तो जबर्दस्ती उस वस्तु को खरीदने की कोशिश न करें। एक बजट बनाएं ताकि हर सप्ताह आने वाले खर्च आप कैसे करेंगे। बजट बनाना एक अच्छा अनुभव हो सकता है। उन चीजों की भी सूची बना कर जिन पर आपको पैसा खर्च करना है, उन्हें खरीदने से पहले आप यह फैसला ले सकते हैं कि आपको इनमें से किस चीज की सचमुच आवश्यकता है।

धन खर्च करने के फैसले को एक-दूसरे के सहयोग से लें

धन खर्च करने का फैसला दोनों को इक्ट्ठे मिलकर लेना चाहिए। विवाह के बाद "मेरा पैसा" और "उसका पैसा" जैसी कोई चीज नहीं होती। हर चीज मिलकर ली जाती है और कानूनी तौर पर भी बाइबल के अनुसार भी और किसी के पास भी यह अधिकार नहीं है कि वह परिवार के दूसरे सदस्यों की सलाह लिए बिना परिवार का पैसा खर्च करे। चाहे पति परिवार का मुखिया होता है लेकिन उसके पास भी यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी पत्नी की सलाह लिए बिना पैसा खर्च करने का फैसला ले सकें।

कोई भी बड़ा खर्च करने का फैसला पति-पत्नी को मिलकर लेना चाहिए। छोटे-छोटे खर्चों के लिए पति-पत्नी के लिए यह काफी है कि उन्हें यह पता हो कि बजट की किस वस्तु पर कितना खर्च किया जाना चाहिए।

इसके अलावा जब भी कोई फैसला लें, परमेश्वर को उसका भागीदार जरूर बनाएं। प्रार्थना में उससे अगुआई की मांग करें। आखिर यह सारा धन उसका ही तो है, जो आप खर्च कर रहे हैं।

सुनिश्चित करें कि खर्च करने के निर्णयों से आत्मिक मूल्यों की झलक मिलती है

खर्च करने के निर्णयों से सांसारिक के बजाय आत्मिक मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए। एक मसीही के रूप में आपका मुख्य लक्ष्य मसीह की सेवा करना है और

आप इस बात को समझते हैं कि जो कुछ आपके पास हैं आप उसके भण्डारी हैं और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करने की जिम्मेदारी आप पर हैं। इस कारण खर्च करने का हर निर्णय सोच समझकर बड़ी सावधानी से लेंगे। अपने आप से पूछें, "मेरा यह निर्णय परमेश्वर की महिमा के लिए है?" इसका उत्तर हो सकता है कि आसान न हो, पर उत्तर ढूंढ़ना आवश्यक है।

धन के आपके इस्तेमाल का एक ढंग जिससे आत्मिक मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए, यह है कि आप "जिनके साथ रहने" अर्थात अपने आस-पास के लोगों से बड़ी और बेहतर चीजें खरीदकर अपने रुतबे को बढ़ाने की कोशिश की संसार की प्रवृत्ति को नकारें। परमेश्वर की आशिषों के भंडारी होने के नाते आपको "प्रभु का धन" हर संभव बेहतरीन ढंग से खर्च करने की कोशिश करनी चाहिए। यानि आप अपनी आमदनी से अधिक खर्च न करें।

ऐसी चीजों पर पैसा खर्च करें जो टिकाऊं हों

खर्च करने के निर्णयों से सांसारिक के बजाय आत्मिक मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए। एक मसीही के रूप में आपका मुख्य लक्ष्य मसीह की सेवा करना है और आप इस बात को समझते हैं कि जो कुछ आपके पास है आप उसके भण्डारी हैं और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करने की जिम्मेदारी आप पर हैं। इस कारण खर्च करने का हर निर्णय सोच समझकर बड़ी सावधानी से लेंगे। अपने आप से पूछें, क्या "मेरा यह निर्णय परमेश्वर की महिमा के लिए है?" इसका उत्तर हो सकता है कि आसान न हो, पर उत्तर ढूंढ़ना आवश्यक है। परमेश्वर की आशिषों के भंडारी होने के नाते आपको "प्रभु का धन" हर संभव बेहतरीन ढंग से खर्च करने की कोशिश करनी चाहिए।

विवाह के समय आप संसार से कहते हैं, "हम वयस्क हैं"। वयस्क होने के कारण आपको यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आप अपना धन बच्चों की तरह खर्च न करें। छोटे बच्चे को धन मिलने पर जल्दी से वह बाहर जानकर खाने-पीने में उड़ा देता है। उसे भविष्य के लिए धन बचाने का कोई ध्यान नहीं है, बल्कि उसे तो केवल अभी का ध्यान है। बड़े होने के करण आपको ऐसी बचकानी बातों को छोड़कर अधिक टिकाऊ ढंग अपने धन का निवेश करना चाहिए। कैसे?

(1) खरीदारी में समझदारी भरे निर्णय लें। बेहतरीन सौदे की तलाश करें यानी अपने धन का बेहतर से बेहतर इस्तेमाल करें। विचार करें कि जो कुछ आप खरीद रहे हैं वह कब तक चलेगा।

(2) अपने बुढ़ापे के लिए योजना बनाएं। अपने विवाह के आरंभ से ही आपको और आपके पति या पत्नी को अपनी आय का एक भाग निरंतर बचाते रहना चाहिए ताकि बुढ़ापे में वह आपके काम आ सके।

(3) प्रभु के लिए उदारता से दें। कलीसिया के काम के लिए देकर आप "स्वर्ग में धन इकट्ठा" कर रहे हैं (देखें मत्ती 6:19क) किसी ने कहा है, "आप इसे साथ नहीं ले जा सकते, पर आप इसे अपने आगे भेज सकते हैं।" जब आप प्रभु के काम को बढ़ाने के लिए देते हैं तो आप वास्तव में अनन्तकाल के लिए निवेश कर रहे हैं।

परमेश्वर का आत्मा

ह्युगो मेकोर्ड

उत्पत्ति 1:2 में कहा गया है कि सृष्टि की रचना के समय रुआह एलोहीम अर्थात "परमेश्वर का आत्मा" पानी के ऊपर मण्डलाता था। आइए परमेश्वरत्व के इस सदस्य के एक हवाले के रूप में रुआह एलोहीम शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करते हैं।

रुआह शब्द का अर्थ

संदर्भ के आधार पर रुआह शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। अधिकतर अंग्रेजी अनुवादों में उत्पत्ति 1:2 में रुआह का अनुवाद "आत्मा" के अर्थ में मिलता है। यह शब्द एक क्रिया से लिया गया है जिसका अर्थ है "सांस लेना।" इसके संज्ञा यप का अर्थ कई बार (हिन्दी बाइबल में यहां इसका अनुवाद "जीवन का आत्मा" और "प्राण" मिलता है) (उत्पत्ति 6:17; भंजन संहिता 146:4), कभी "वायु" (अय्यूब 41:16), कई बार "पवन" (उत्पत्ति 8:1), और कभी "आत्मा" (भजन संहिता 31:5) होता है।

नये यहूदी अनुवाद में मूसा के वाक्यांश रुआह एलोहीम के लिए "परमेश्वर की ओर से पवन" के अर्थ में मिलता है। ऐसा इसलिए नहीं कि कभी "आत्मा" शब्द एक गलत अनुवाद है, बल्कि इसलिए है क्योंकि इस अनुवाद के प्रधान सम्पादक हैरी एम. ओरलिंसकी के अनुसार यहूदी और अन्य लोग नहीं मानते थे कि पवित्र आत्मा "पिता और पुत्र के साथ परमेश्वरत्व की एकता" में भागीदार हैं। संपादक का कहना था कि एक "मसीही व्याख्या" होने के कारण "आत्मा" शब्द को निकाल दिया गया था; और इसे इसलिए निकाला गया था क्योंकि "सृष्टि की रचना के बाइबल के वृत्तांत की प्राचीन निकट पूर्वी पृष्ठभूमि पवन" शब्द के उपयोग के पक्ष में है। परन्तु निकटपूर्व की मिथ्या कहानियों के पक्ष में रुआह एलोहीम के बाइबल से जुड़े उपयोगों की उपेक्षा करना सही अनुवाद को खोजने के लिए कोई समझदारी की बात नहीं लगता।

उत्पत्ति 1:2 में रुआह शब्द के संदर्भ की जांच करने पर पता चलता है कि रुआह शब्द एलोहीम के साथ जुड़कर "परमेश्वर के रुआह" का सही संबंध बनाता है। यदि इसका अर्थ केवल "पवन" ही था, तो इसके साथ "परमेश्वर का" वाक्यांश क्यों जोड़ा गया? पुराने नियम में रुआह एलोहीम के चरानवे हवालों की जांच करने पर, पता चलता है कि उत्पत्ति 1:2 ही ऐसी जगह है जहां "परमेश्वर की वायु" अनुवाद उचित हो सकता था।

पुराने नियम की दूसरी आयतें (अय्यूब 26:13, भजन संहिता 104:30) संकेत देती हैं कि परमेश्वर के आत्मा ने रचनात्मक कार्य से कुछ करना था, जो सही अनुवाद के रूप में "परमेश्वर के आत्मा" की ओर संकेत करता है। इसके अतिरिक्त रुआह एलोहीम वाक्यांश के अगले संदर्भ में उत्पत्ति 1:26 संकेत देता

है कि अपने रचनात्मक कार्य में परमेश्वर के एक या उससे अधिक सहयोगी थे, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार और अपनी समानता में बनाएं।"

क्योंकि उत्पत्ति 1:2 में "पवन या वायु" के रूप में रुआह के अनुवाद का बाइबल धर्म शास्त्र में कोई कारण नहीं मिलता, और क्योंकि इसके दोनों ही अर्थ "आत्मा" का स्पष्ट और सामान्य संदर्भ हैं, इसलिए लगता है कि उत्पत्ति 1:2 में रुआह एलोहीम का अर्थ "परमेश्वर का आत्मा" ही होना चाहिए। इस प्रकार रुआह एलोहीम वाक्यांश को परमेश्वर की व्याख्या माना जा सकता है।

"परमेश्वर का आत्मा" का महत्व

ईश्वर के व्याख्यात्मक वाक्यांश के रूप में "परमेश्वर का आत्मा" के कम से कम छह महत्वपूर्ण अर्थ हैं।

1. परमेश्वरत्व उत्पत्ति 1:2 में "परमेश्वर का आत्मा" वाक्यांश परमेश्वरत्व के एक से अधिक सदस्य होने की पहली जानकारी है। वास्तव में इस बात को समझाया नहीं जा सकता कि यह कैसे हो सकता है कि तीन "व्यक्ति" होने के बावजूद परमेश्वर एक ही कैसे है, जिनसे वह परमेश्वर बनता है। उसके गुणों का भेद नहीं पाया जा सकता; केवल परमेश्वर का आत्मा ही परमेश्वर की गहरी बातों को जानता है (1 कुरिन्थियों 2:10, 11)। मनुष्यों को उसकी बात कितनी फुसफुसाहट की तरह सुनाई देती है (अय्यूब 26:14)।

मनुष्य को परमेश्वर के आत्मा के बारे में जो भी ज्ञान है उसका बड़ा महत्व है। यद्यपि वह हर जगह है, परन्तु फिर भी वह एक व्यक्ति ही है। उसमें समझ है। उसमें दिमाग है (रोमियों 8:27); वह सुनता और बोलता है (यूहन्ना 16:13) गहराई से महसूस करता है (इफिसियों 4:30)। आत्मा मसीही लोगों के जीवनों में रहता है (गलातियों 4:6), और स्वर्ग में वह उनके लिए प्रार्थना करता है (रोमियों 8:26, 27), वह पापियों को परमेश्वर की संतान होने के लिए बुलाता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

2. ईश्वर का स्वभाव "परमेश्वर का आत्मा" वाक्यांश ईश्वर के स्वभाव को ही दर्शाता है अर्थात यह कि वह एक आत्मिक जीव है (यूहन्ना 4:24) न कि मांस और हड्डियां (लूका 24:39), न मांस और लहू (1 कुरिन्थियों 15:50)। आत्मा होने के कारण, वह मनुष्य की आंखों को दिखाई नहीं देता है (कुलुस्सियों 1:15)।

क्योंकि आत्मा के मांस और हड्डियां नहीं होते इसलिए स्पष्ट है कि इस भाषा में परमेश्वर की नसें, मुंह, पीठ, पांव, भुजाएं, कान, आंख, पलकें और पंख (निर्गमन 15:8; 33:23; 24:10; व्यवस्थाविवरण 33:27; यशायाह 59:1, 2, भजन संहिता 11:4; 91:40 केवल सांकेतिक अर्थ में ही समझे जा सकते हैं। दुख की बात यह है कि धार्मिक शिक्षक परमेश्वर के स्वभाव में इतनी गलती कर सकते हैं कि उसे यह लिखते हैं कि "मनुष्य की तरह ही उसके दिखाई देने वाले मांस और हड्डियां" हैं।

3. दिखाई देने और अदृश्य "परमेश्वर का आत्मा" वाक्यांश का उपयोग

स्पष्ट करता है कि किसी मनुष्य ने परमेश्वर को कभी देखा क्यों नहीं, और कोई मनुष्य उसे क्यों नहीं देख सकता (निर्गमन 33:20; यूहन्ना 1:18; 1 तीमुथियुस 6:16)। आत्मा दिखाई नहीं देता (कुलुस्सियों 1:15); इसलिए मानवीय आंखों ने परमेश्वर के सार को कभी नहीं देखा।

परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है। उसके लिए शारीरिक रूप में अपने आपको दिखाना छोटी सी बात है, अब्राम के डेरे के पास एक मनुष्य के रूप में (उत्पत्ति 18:1), मूसा को आग के रूप में (निर्गमन 3:2), इस्राएलियों को घने बादल के रूप में (निर्गमन 19:9) और एलिय्याह को आवाज के रूप में (1 राजाओं 19:13) मनुष्य के रूप में "इमानुएल" कहलाने वाला बनकर (मत्ती 1:23; यूहन्ना 14:9)। मनुष्य की आंखों ने परमेश्वर के इन तीनों रूपों को तो देखा है, परन्तु वह परमेश्वर के सार अर्थात रुआह, आत्मा को नहीं देख सकता।

4. नाशवान नहीं, "परमेश्वर का आत्मा" वाक्यांश का एक और एक महत्वपूर्ण अर्थ यह है कि ईश्वर अविनाशी है। यदि परमेश्वर मांस और लहू में होता है, तो उसने नाशवान होना था; इसलिए वह मर सकता था। क्योंकि उसका स्वभाव आत्मा है इसलिए वह मर नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 15:50)। अविनाशी केवल वही है (1 तीमुथियुस 6:16)।

5. स्थानीय नहीं, परमेश्वर के आत्मा को स्थानीय अर्थ में नहीं दिया जा सकता उसके प्रदर्शनों को अंतरिक्ष में देखा जा सकता है और देखा गया है (उत्पत्ति 18:33); परन्तु परमेश्वर के सार को जो कि आत्मा है, एक स्थान पर सीमित नहीं किया जा सकता। कोई भी पहाड़ या मन्दिर, यहां तक कि ऊंचे से ऊंचे आकाश भी उसे समा नहीं सकते। (1 राजाओं 8:27)। कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां यह कहा जाए कि परमेश्वर वहां नहीं है (भजन संहिता 139:7-12)।

6. मनुष्य के स्वभाव की व्याख्या, "परमेश्वर का आत्मा" शब्द हमें यह समझाने में सहायता करता है कि मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है। यदि परमेश्वर आत्मा है, तो मनुष्यों में उसका स्वरूप भी आत्मा है। हमारी देहें तो हमें अपने माता-पिता से मिली हैं, और अन्ततः ये मिट्टी में मिल जाएंगी; परन्तु हम सब में रुआह अर्थात आत्मा को परमेश्वर ही बनाता है (जकर्याह 12:1)। वह हमारी आत्माओं का पिता है; उसी से हमारी आत्माएं आती हैं, और उसी के पास चली जाती हैं (सभोपदेशक 12:7; इब्रानियों 12:9)। यद्यपि जब तक आत्मा मनुष्य के पास रहती है, उसकी देह महत्वपूर्ण और पवित्र है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20), परन्तु यह मनुष्य का वास्तविक स्वभाव नहीं है, अर्थात जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया हो।

शरीर से कुछ लाभ नहीं है; जीवन तो परमेश्वर के आत्मा से ही मिलता है (यूहन्ना 6:63)। "भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इसको और उस को दोनों को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन प्रभु के लिए और प्रभु देह के लिए है" (1 कुरिन्थियों 6:13)। मनुष्य

का केवल आत्मा ही जीवित रहता है, उसके उस भाग को परमेश्वर के आत्मा जैसा बनाया गया है।

"परमेश्वर का आत्मा" वाक्यांश हमें परमेश्वर के अनिवार्य स्वभाव को दिखाकर परमेश्वर की समझ देने में सहायता करता है। यह समझाता है कि बाइबल कैसे कह सकती है कि परमेश्वर को देखकर भी देखा नहीं गया है। यह तथ्य कि परमेश्वर "आत्मा" है, बताता है कि वह क्यों नहीं मर सकता और उसे स्थायी क्यों नहीं बनाया जा सकता और यह कि मनुष्य का कौन सा भाग परमेश्वर की समानता में बनाया गया है।

परमेश्वर के आत्मा को सृष्टि (उत्पत्ति 1:2; अय्यूब 26:13 भी देखिए; भजन 104:30) और मनुष्य की सृष्टि के भाग के रूप में देखा जाता है (उत्पत्ति 1:2, 26; अय्यूब 33:4)।

हमारा परमेश्वर आत्मा की प्रेरणा देने वाला है

जेम्स ई. प्रीस्ट

ऐसे पाठ के बाद कि परमेश्वर ने अपने आपको कैसे प्रकट किया है, इस बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने अपना संदेश देने वालों को कैसे प्रेरणा दी। परमेश्वर को प्रेरणा प्रकाशन देने का एक विशेष माध्यम है। इस पाठ में हम अपने परमेश्वर की दो पारस्परिक पहलुओं में "प्रेरणा देने वाले" के रूप में बात करेंगे, जिसमें दोनों का संबंध हमारे साथ है।

हम पर उसका प्रभाव

पहले तो, परमेश्वर प्रेरणा देने वाला है क्योंकि जो वह है और जो कुछ वह करता है, उसमें उससे प्रभावित होने वालों पर आनन्ददायक, उत्साह देने वाला और उल्लासित करने वाला प्रभाव पड़ता है। वही सच्चा और जीवित परमेश्वर है जिसने महान कार्य किया और करता रहता है। उसकी महानता तथा सामर्थ सृष्टि के उसके कार्य तथा हमारे अन्दर जीवन के दान में दिखाई देती है। हम जानते हैं कि वह जीवन का कर्ता हैं हमें उसमें सब बातों का आरंभ दिखाई देता हैं हम उसे इन सबके चलाने वाले के रूप में जानते हैं। वह जीवन को दिशा देकर इतिहास को सार्थक बनाता है। हम उसे जीवन को बनाए रखने वाले के रूप में जानते हैं। हमारा जीवन उसकी सामर्थ से बना रहता है। उसकी उपस्थिति का विशेष महत्व है क्योंकि हम उसी के लिए जीवित हैं। उसी में हम आश्वस्त होते हैं कि भविष्य में हमारे लिए प्रतिज्ञा है; क्योंकि उसने समस्त संसार को अपने हाथों में रखा हुआ है।

हमारे सृष्टिकर्ता तथा अगुआई देने वाले के रूप में परमेश्वर की हमारी धारणाएं हमारी वास्तविकता का भाग हैं। वे अस्तित्व के हमारे कारण को दिखाते हैं। जब हम परमेश्वर में भरोसा रखते हैं, तो जीवन मात्र अस्तित्व से बढ़कर हो जाता है। हमारी

दिनचर्या जीवन के बड़े दायरे में समा जाती है। नीरस कार्यों और ओछे मूल्यों की उकताहट का स्थान परमेश्वर के संसार की सुन्दरता तथा परमेश्वर के लोगों की संगति के आनन्द की धन्यवाद के साथ स्तुति ले लेती हैं और यही एक साहासिक कार्य बन जाता है। जीने का आनन्द एक नियम बन जाता है।

कहते हैं तो जीवन की वास्तविकता से क्या इनका कोई लेना-देना नहीं है? ऐसा कदापि नहीं है। हम प्रेरणा देने वाले परमेश्वर के उन लोगों पर प्रभाव की बात कर रहे हैं जो उसके आगे अपने आपको समर्पित कर देते हैं। हम जान सकते हैं कि ऊपर दिया गया विश्लेषण इच्छापूर्वक सोच नहीं है। हमें ऐसी बातें लिखी हुई मिल जाती हैं जिनसे पता चलता है कि उसका प्रभाव अपने लोगों के जीवन में कैसे प्रेरणादायक हो सकता है।

अब्राम को भविष्य और परमेश्वर के साथ अपने संबंध को चिंता व्यक्त करने पर बड़ा आश्वासन दिया गया था। उसे कहा गया था, "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? ...तेरा वंश ऐसा ही होगा। उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना" (उत्पत्ति 15:5, 6)। अब्राम को उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रतिज्ञा देकर और यह बताकर प्रतिष्ठा दी गई कि परमेश्वर में उसका विश्वास गलत नहीं था।

यहोशू के दिनों में इस्राएलियों के लिए जीवन आसान नहीं था। उनका महान अगुआ, मूसा उनसे ले लिया गया था। आगे के समय का कुछ पता नहीं था। कनान के आक्रमण का खतरा था। शक्तिशाली, सुरक्षा के अतिरिक्त साधन प्राप्त लोगों के साथ खतरनाक युद्ध करने पड़ते थे। ऐसे तनावपूर्ण समय में यहोशू लोगों की अगुआई कैसे कर पाया था? " यहोवा ने यहोशू से कहा, आज के दिन से मैं सब इस्राएलियों के सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरंभ करूंगा, जिससे वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं" (यहोशू 3:7)। यहोशू को परमेश्वर की ओर से बड़ी दलेरी मिली थी। कठिन समयों में भी जब हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारी अगुआई कर रहा है तो कठिन समयों में भी, बाधाओं को अवसर के रूप में देखा जाता है।

हन्ना एप्रैम के पहाड़ी देश के निवासी एल्लकाना की पत्नी थी। कई वर्ष पहले उनका विवाह हुआ था। उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था। परन्तु वह दुखी थी क्योंकि वह उसे पुत्र न दे सकी थी। दूसरी शताब्दी ई. पू. के दौरान प्राचीन काल में पूर्वी देशों के निकट रहने वाली महिलाओं के लिए निःसंतान होना बहुत बड़ा कष्ट होता था। विवाहित महिलाएं बांझपन होने को एक भारी बोझ मानती थी। निश्चय ही हन्ना भी ऐसी ही एक महिला थी। इसलिए शीलों में उसने परमेश्वर के मन्दिर में, सच्चे मन से एक पुत्र के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था। आनन्द से उसने अपने पुत्र का नाम ऐसा रखा जो परमेश्वर के प्रति उसकी सेवा को दिखाता था, उसने उसका नाम शमूएल रखा।

और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा हुआ है। मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरूद्ध खुल गया, क्योंकि

मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूं। यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं, और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है (1 शमूएल 2:1, 2)।

एक हजार से अधिक वर्ष बाद हम एक और स्त्री के बारे में पढ़ते हैं, जिसने परमेश्वर की ओर से समाचार पाकर हर्ष से उसकी स्तुति की। वह उसे पवित्र आत्मा के द्वारा एक बालक को आशीष देने वाला था। उसका नाम यीशु होना था (मत्ती 1:20, 21)। उसके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन था। इस उद्देश्य मिशन तथा अवसर का क्या अर्थ था। उसकी कृतज्ञता तथा आनन्द गीत में व्यक्त किया गया था। "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। ...क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है" (लूका 1:46-49)।

परमेश्वर के प्रभाव में रहकर कोई कितना आश्वस्त तथा सकारात्मक हो सकता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण पौलुस है। एक प्रेरित के रूप में उसका जीवन हलचल तथा तनाव से भरा हुआ था। पौलुस ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने के कारण बहुत सी यातनाएं झेली, हजारों मील तक गया और कई वर्ष जेलों में बिताए थे। क्या वह आश्वस्त था? उसने कहा था, "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों 4:13)। क्या वह सकारात्मक था? उसने कहा था, "निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 3:1क)। क्या वह संतुष्ट था? उसने कहा था, "मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में संतोष करूं" (फिलिप्पियों 4:11ख) जीवन का उसने अवलोकन कैसे किया? उसने कहा था :

"मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं" (2 तीमुथियुस 4:7, 8)।

बाइबल से इन उदाहरणों के अतिरिक्त और भी उदाहरण दिए जा सकते थे। परन्तु उनमें भी यही सच्चाई थी जो इनमें है। युगों, अनगिनत लाखों-करोड़ों लोगों ने परमेश्वर के इन आरंभिक अनुयायियों जैसा अनुभव पाया हैं। परमेश्वर वास्तव में बड़ा उत्साह देने वाला है। वह हमें ऊंचा उठाता है। वह हमारी अगुआई करता है। वह हमारे जीवन को अर्थ तथा महत्व देता हैं वह हमें अनन्त जीवन के लिए भी बुलाता है। परमेश्वर के प्रेरणा देने वाला होने में कोई भी संदेह की बात नहीं है।

बाइबल की प्रेरणा

परमेश्वर अपने प्रेरणा देने के स्वभाव को दूसरी प्रकार अर्थात पवित्र शास्त्र में प्रेरणा देकर व्यक्त करता है, जो पवित्र शास्त्र की विश्वसनीयता का आधार है। बाइबल बताती है कि परमेश्वर में भरोसा रखकर और उसकी आज्ञा मानकर कैसे इब्राहीम, यहोशू, एलिय्याह, मरियम, स्तिफनुस और बहुत से दूसरे लोग विजयी जीवन जी सके थे। नि:संदेह, यदि पवित्र शास्त्र के सत्य होने के आश्वासन के बिना हमें यह पता नहीं चल सकता कि ये "सच्ची कहानियां" हैं। परन्तु, हमें तो आश्वासन है।

बाइबल पुरातत्व तथा बाइबल के समय के समकालीन प्राचीन लेखों जैसे मसीही प्रमाणों के विशाल क्षेत्र ने बाइबल के इतिहास की मान्यता को प्रमाणित करने के लिए एक लम्बी दूरी तय की है। बाइबल को उच्च दृष्टिकोण देने के लिए इन स्रोतों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। जो उन्नति आज हो रही है उसके लिए हम परमेश्वर के धन्यवादी हैं। ये प्रमाण बाइबल में हमारे भरोसे को बढ़ाते हैं, परन्तु ऐसा वे हमें अपनी ऐतिहासिक यथार्थता का ज्ञान देकर करते हैं। यदि बाइबल जो होने का दावा करती है अर्थात यह कि यह परमेश्वर का वचन है तो इसे यथार्थ होना आवश्यक है। हम पढ़ते हैं, "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है" (2 तीमुथियुस 3:16)।

"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया" वाक्यांश को यूनानी भाषा के वाक्यांश में देखने पर विभिन्न अनुवादों से उत्पन्न अनेकार्थता का पता चलता है। यह अनेकार्थता यूनानी शब्द के कारण होती है जिसका अर्थ परमेश्वर की सांस से है, और लातीनी भाषा के अनुवादित होकर "परमेश्वर की प्रेरणा" बन जाता है। इस प्रक्रिया में "परमेश्वर की सांस से बाहर" का अर्थ "परमेश्वर की सांस के अन्दर" हो चला है। 2 तीमुथियुस 3:16 में पौलुस जोर देकर कह रहा था कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा देने वाली शक्ति का परिणाम है और हमारे लिए लाभदायक है। वास्तव में, बाइबल में हर जगह परमेश्वर की "सांस बाहर जाने" के द्वारा उसकी सृजनात्मक शक्ति का महान विषय मिलता है। हम परमेश्वर द्वारा मानवीय सृजना के समय उसके इस प्रदर्शन का अध्ययन कर चुके है। भजन 33:6 में हम उसकी सृष्टि के वर्णन के उसके श्वास से बनने का चित्र देख सकते हैं, "आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे तारागण उसके मुंह की श्वास से बने" (भजन संहिता 33:6)। इस प्रकार के श्वास निकलने" को उसका उद्देश्यपूर्ण करने के लिए उसकी सामर्थ निकलने के रूप में देखते हैं। जीवन देने, संसार की सृष्टि करने या अपने वचन को लिखवाने के लिए उसने यही ढंग अपनाया। जिस प्रकार सृष्टि का अस्तित्व "परमेश्वर की सांस" से हुआ, वैसे ही बाइबल भी उसके "श्वास" से दी गई है। दोनों ही उसकी सामर्थ तथा कार्य की उपज हैं।

मसीही प्रमाणों के लिए तो हम धन्यवाद करते ही हैं जो बाइबल की ऐतिहासिक यथार्थता का संकेत देते हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन के लिए धन्यवाद तथा प्रेम विशेषकर हमारे विश्वास की बात हैं। परमेश्वर के लिखित वचन के पास जाकर हम पाते हैं कि हमारा विश्वास यहीं से बना, पुरातत्व या किसी अन्य विज्ञान से नहीं (रोमियों 10:15-17)। परमेश्वर के लिखे हुए वचन की सामर्थ ही विश्वास उत्पन्न करती है और विश्वास को स्थिर करती है। बाइबल में हमें एक अव्यक्त शक्ति मिलती है जिसका अनुभव हमें कहीं और नहीं हो सकता। हम तूफान, भूकम्प, ज्वारभाटा की लहरों और जंगल की आग आदि भड़काने वाली शक्ति को जानते हैं। पवित्र शास्त्र में हम एक ऐसी शक्ति को देखते हैं जो इतनी जबरदस्त है कि मनुष्य के जीवन को बदलकर उसका उद्धार कर सकती है। यह स्रोत इन विनाशकारी शक्तियों से, पाप की

विनाशकारी शक्ति से और उस विनाशकारी शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली हैं जिसका सामना हम जन्म से करते हैं और उसे मृत्यु कहते हैं।

यह शक्ति हमें स्वतंत्र कर सकती है (यूहन्ना 8:32)˙ भजन लिखने वाले ने कहा है, "तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला" (भजन संहिता 119:105)। यीशु के विषय में प्रेरित यूहन्ना ने कहा है, "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)। बाइबल में हम परमेश्वर के वचन को मनुष्य के रूप में देखते हैं। हम उसे उसके रूप में देखते हैं जिसके द्वारा हमें फिर अपने घर ले जाया जाता है (यूहन्ना 14:1-6)। बाइबल में, जो कि आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों द्वारा लिखी गई है, हम एक सबसे अधिक प्रेरणा देने वाले व्यक्ति से मिलते हैं। उसने कहा था, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं" (यूहन्ना 10:10ख)। हमारा परमेश्वर सचमुच कई प्रकार से प्रेरणा देने वाला है।

मसीहीयत के विरोधाभास

जॉन स्टेसी

विरोधाभास का तात्पर्य ऐसी बात से है जो परस्पर-विरोधी प्रतीत होती है। अर्थात एक ऐसी बात जो सुनने में सही नहीं लगती। वह सच तो होती है, पर विचित्र सी लगती है। जैसे कि मसीहीयत और मसीही जीवन कुछ लोगों को विचित्र से लगते है। जो लोग मसीही नहीं है उन्हें इनमें कोई सही बात नजर नहीं आती। 1 कुरिन्थियों 1:18 में पौलुस लिखकर कहता है कि, "क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" अब हम मसीहीयत में पाई जाने वाली कुछ ऐसी विरोधाभासी बातों पर विचार करेंगे जो उन लोगों को जो मसीह में नहीं है, मूर्खता की बातें प्रतीत होती हैं।

सबसे पहले, बाइबल में लिखा है, कि जीने के लिये पहले मरना आवश्यक है। जबकि संसार का दृष्टिकोण यह है, कि वर्तमान जीवन ही सब कुछ है और मरने के बाद जीवन का अन्त हो जाएगा। यूहन्ना 12:24 में यीशु ने कहा था, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" केवल मसीह के सुसमाचार को मानने के द्वारा ही मनुष्य पाप के लिये मरता है। रोमियों 6:11 में पौलुस कहता है कि, "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।" किन्तु, सबसे विचित्र बात यह है जो यूहन्ना 12:25 में यीशु ने कही थी, उसने कहा था कि, "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है..."

एक दूसरी विरोधाभासी बात हमें बाइबल में यह मिलती है कि परमेश्वर से प्रेम रखने के लिये हमें औरों को अप्रिय जानना है। यीशु ने लूका 14:26 में कहा था कि, "यदि

कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के-बालों और भाइयों और बहनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" यहां अप्रिय जानने का तात्पर्य प्रेम कम करने से है। अर्थात हमारे जीवनों में परमेश्वर का स्थान सबसे पहला होना चाहिए। तभी हम वास्तव में उस से प्रेम रखेंगे। यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखना चाहते हैं तो हमें पाप से बैर रखना होगा। पौलुस, रोमियों 12:6 में कहता है, "बुराई से घृणा करो....।"

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि सच्ची प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये हमें मसीह के लिये दुख उठाना आवश्यक है। याकूब 1:2, 3 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ों, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।" समस्याएं मसीही लोगों के जीवनों को और भी खुशनुमा बना देती है, क्योंकि उनके द्वारा हम परमेश्वर के और भी अधिक समीप आ जाते है। उनके द्वारा हमारे जीवनों में पाई जाने वाली अशुद्धता तथा गंदगी दूर हो सकती है और हमें उस प्रकार के मसीही बनने का अवसर मिलता है जैसा कि हमें वास्तव में होना चाहिए।

ऐसे, ही बुराई से लड़ने से ही मसीही जीवन में सच्ची शांति आ सकती है। हम मसीह के साथ मिलकर शैतान से लड़ रहे है। तीमुथियुस से पौलुस ने, 1 तीमुथियुस 1:18 में कहा था, "मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रह।" ऐसे ही 1 तीमुथियुस 6:12 में उसने कहा था कि "विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ और उस अनन्त जीवन को धर ले...." याकूब 4:7 में लिखा है, "...शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे सामने से भाग निकलेगा।" सो यदि हम सच्ची शांति चाहते हैं तो हमारे परमेश्वर के लोगों की सेना में भर्ती होकर अपने उद्धार के कप्तान की आज्ञा मानकर उसके पीछे चलना चाहिए। शांति के लिये हमें लड़ने की आवश्यकता है।

क्या आप पाप के लिये मर चुके है? या आप पाप में मर रहे हैं? क्या आप मसीह के सामने अपने परिवार के जनों को अप्रिय समझते हैं? क्या आप पाप से घृणा करते हैं? क्या आप मसीह के लिये दुख उठाते हैं? क्या आप लड़ रहे हैं?

जब प्रेरितों के ऊपर पवित्रात्मा आया था तो उस से सामर्थ पाकर उन्होंने उन लोगों की भाषाओं में उन से बातें की थी जो उस समय यरुशलेम में मौजूद थे। उनका उपदेश साधारण था। उन्होंने उन लोगों से कहा था कि जिस मसीह को उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था वह, उनके भविष्यद्वक्ताओं के कथनानुसार, अभी भी जीवित है। यह सुनकर उन्होंने अपने आपको दोषी अनुभव किया था और उन्होंने प्रेरितों से पूछा था कि "हे भाइयों, हम क्या करे?"

जो वे कर चुके थे उसे तो वे नहीं मिटा सकते थे, लेकिन पतरस ने उनसे कहा कि वे अपना-अपना मन फिराएं और अपने अविश्वास को छोड़कर मसीह का विरोध करने के विपरीत उसमें विश्वास लाएं और बपतिस्मा लें। और उसी दिन लगभग तीन हजार लोग बपतिस्मा लेकर उनमें अर्थात प्रेरितों के साथ मिल गए।